नेहरू-इंदिरा के बराबर मोदी

देश में ऐसा पहली बार हो रहा है, जब बहुमत के साथ लगातार दूसरी बार कोई पार्टी सरकार बनाने की स्थिति में आ गई है। भाजपा को पिछली बार 282 सीटें मिली थीं। जवाहरलाल नेहरू ने लगातार तीन बार और इंदिरा गांधी ने दो बार कांग्रेस को पूर्ण बहुमत दिलाकर सरकार बनाई थी। मोदी का कद अब नेहरू और इंदिरा जैसा हो गया है। इस कद में आने वाले वर्षों में इजाफा होगा, कोई दो राय नहीं है।

17वीं लोकसभा के लिए 17 मई को आखिरी दौर का चुनाव प्रचार खत्म हुआ और उसी दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहली बार मीडिया से मुखातिब होकर आत्मविश्वास के साथ फिर से सरकार में वापसी का दावा कर दिया। 19 मई को जब तमाम एग्जिट पोल के अनुमान आए तो प्रधानमंत्री मोदी का आत्मविश्वास एक मजबूत सच्चाई की झलक देता दिखाई दिया। अब एग्जिट पोल के ही अनुसार आए परिणामों ने जता दिया कि अगले पांच साल तक मोदी ही देश पर राज करेंगे। मोदी के प्रधानमंत्री न बनने की लगाई जा रही अटकलों पर भी विराम लग गया है। जनता ने जो जनादेश दिया है, उससे सिर्फ विपक्ष ही नहीं एनडीए के घटक दल भी हैरत में हैं। यह कहा जाए कि 2014 में मोदी के नाम की लहर थी तो 2019 में सुनामी आई है, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। मोदी सरकार की इस जीत पर आने वाले कई दिनों तक विश्लेषण किया जाता रहेगा, मगर सही मायने में विश्लेषण विपक्ष को करना है। मोदी की प्रचंड जीत के बाद विपक्ष जिस स्थिति में है, उससे वह खुद ही बाहर निकल सकता है। कोई दूसरा नहीं आने वाला।

देश में ऐसा पहली बार हो रहा है, जब बहुमत के साथ लगातार दूसरी बार कोई पार्टी सरकार बनाने की स्थिति में आ गई है। भाजपा को पिछली बार 282 सीटें मिली थीं। जवाहरलाल नेहरू ने लगातार तीन बार और इंदिरा गांधी ने लगातार दो बार कांग्रेस को पूर्ण बहुमत दिलाकर सरकार बनाई थी। नेहरू ने 1952, 1957 और 1962 का चुनाव जीत था। वहीं, इंदिरा गांधी ने 1967 और 1971 का चुनाव पूर्ण बहुमत के साथ जीता था। मोदी ने अब इंदिरा की बराबरी कर ली है। 2014 में उनके नेतृत्व में भाजपा ने 282 सीटें जीती थीं। इस बार भी वह 280 से ज्यादा सीटें जीत रही है। खैर, मोदी की इस जीत का शेयर बाजार ने भी स्वागत किया है। सेंसेक्स पहली बार 40 हजार के आंकड़े को पार कर गया तो वहीं निफ्टी 12 हजार के आंकड़े को पार कर गया है। इससे पहले 21 मई को एग्जिट पोल नतीजों की वजह से सेंसेक्स 39571 के ऑल टाइम हाई लेवल पर था। इस लोकसभा चुनाव में मोदी पहले से भी ज्यादा मजबूत नेता बनकर उभरे हैं। लोकसभा चुनाव के इन रुझानों से कई बड़े संकेत और संदेश निकल रहे हैं। अब लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद नरेंद्र मोदी पहले से अधिक मजबूत प्रधानमंत्री बनकर उभरेंगे।

नेहरू और इंदिरा के बाद मोदी तीसरे ऐसे नेता हैं जो पूर्ण बहुमत के साथ दोबारा वापसी कर रहे हैं। ...मोदी हैं तो मुमकिन है, अबकी बार, फिर मोदी सरकार, बीजेपी तीन सौ के पार, आएगा तो मोदी ही, मैं भी चौकीदार,....लोकसभा चुनाव की कैंपेनिंग के दौरान उछाले गए ये सभी नारे सच साबित हो रहे हैं। लोगों ने इन नारों में यकीन दिखाया। इस लोकसभा चुनाव में अमित शाह सबसे बड़ी कहानी बनकर उभरे हैं। उनके बूथ प्रबंधन ने सबको हैरान करके रख दिया है। मेरा बूथ सबसे मजबूत महज एक स्लोगन भर नहीं रहा, बल्कि राजनीति के विद्यार्थियों के लिए यह एक अध्ययन का विषय हो गया है। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी को आत्ममंथन कर खुद को नए सिरे से तैयार करने की जरूरत पड़ेगी। राजनीति की जमीन पर उनकी लव-पॉलिटिक्स कहीं नहीं ठहरी।

यूपी में बुआ-बबुआ महागठबंधन की बहुत अधिक चर्चा रही, फिर भी यह फेल साबित होता दिख रहा है। हालांकि इस गठबंधन के फेल होने की अटकलें पहले से लग रहीं थी। लोकसभा चुनाव के रुझान देखें तो सपा-बसपा और रालोद का महागठबंधन 30 का आंकड़ा भी पार करता नहीं दिख रहा है। कांग्रेस महासचिव के तौर पर राजनीति में उतरने वालीं प्रियंका गांधी का उत्तर प्रदेश में जादू नहीं चला। उन्हें अब अगली बार के लिए खुद को तैयार करने की जरूरत है जबकि प्रियंका गांधी को चुनाव में ट्रंप कार्ड माना जा रहा था। दिल्ली के रुझान बता रहे हैं कि भाजपा 7- 0 के साथ क्लीन स्वीप करने जा रही है। चुनाव से पहले तमाम कोशिशों के बावजूद आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच गठबंधन भी नहीं हो सका, सभी सातों सीटें भाजपा को जा रहीं हैं। पश्चिम बंगाल में ममता बनाम मोदी की प्रतिष्ठापरक लड़ाई में भाजपा ने दबदबा कायम किया है। भाजपा इस राज्य में दमदार प्रर्दशन कर हैरान कर दिया है।

बिहार में लालू यादव के वारिस तेजस्वी यादव में संभावनाएं देखी जा रहीं थीं, नीतीश और मोदी की जोड़ी के आगे राजद, कांग्रेस और अन्य क्षेत्रीय दलों का गठबंधन पूरी तरह फेल साबित हुआ है। दिलचस्प बात है कि लालू की बेटी मीसा भारती पाटलिपुत्र सीट से आगे चल रहीं हैं। मोदी लहर एक बार फिर तमिलनाडु में चेन्नई के समुद्र तट को नहीं छू पाई। तमिलनाडु में भाजपा इस बार अच्छे प्रदर्शन का सपना संजोई थी, मगर पूरे देश में लहर क्या सुनामी होने के बावजूद तमिलनाडु में असर नहीं दिखा। यहां सत्ताधारी एआईएडीएमके पर डीएमके भारी पड़ी दिख रही। लोकसभा चुनाव में भाजपा के हिंदुत्व कार्ड के आगे विपक्ष के आरोप असरहीन दिखा। भगवाधारी प्रत्याशियों का दबदबा देखने को मिला। साध्वी निरंजन ज्योति एवं साक्षी महराज भी चुनाव मैदान में दबदबा कायम करते दिखे। भाजपा की जीत को विपक्षी सांप्रदायिकता से जोड़ रहे हों लेकिन हकीकत यह है कि मतदाताओं की सोच इन मुद्दों के आसपास भी फटकती नहीं दिख रही। यह सोच हिंदी पट्टी वाले बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड जैसे राज्य के लोगों की है, जहां लोकसभा चुनाव में मोदी लहर सिर चढ़कर बोली और इन प्रदेशों में गैर एनडीए दलों का करीब-करीब सूपड़ा साफ हो गया।

चुनाव पूर्व किए गए सर्वेक्षणों में मोदी सरकार की प्राथमिकताओं को लेकर पूछे गए सवालों में मंदिर निर्माण को प्राथमिकता देने के पक्ष में महज एक से दो फीसदी ही लोग थे। साफ हो गया था कि देश की 65 फीसदी आबादी युवा है जो अब मंदिर-मस्जिद की बजाए विकास के एजेंडे को आगे बढ़ाने और त्वरित परिणाम हासिल करने की हिमायती है। हिंदी पट्टी के इन राज्यों में 70 फीसदी से ज्यादा लोग विकास के एजेंडे को लोकसभा चुनाव में मोदी की प्रचंड जीत की वजह मानते हैं तो एक-चौथाई के लगभग लोग ऐसे भी हैं जो इस जीत को ध्रुवीकरण की राजनीति का नतीजा बताते हैं। फिर भी भाजपा को लोग देश की समस्या का समाधान करने वाली सबसे बेहतर पार्टी के रूप में देख रहे हैं। मोदी की लोकप्रियता आज भी सिर चढ़कर बोल रही है, जिससे काडर आधारित यह पार्टी उच्च स्तर पर पहुंच चुकी है।

बहरहाल, अब नई सरकार को देश-विदेश में उभरती विभिन्न चुनौतियों और समस्याओं के बीच से ही भारतीय हितों को सर्वथा नवनीतियों के आलोक में साधना होगा। अमेरिका-ईरान के मध्य शीतयुद्ध के कारण ईरान से तेल की आपूर्ति बाधित होना नई सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। तेल और गैस के लिए विदेशों पर भारत की निर्भरता के संदर्भ में सरकार को अवश्य विचार करना चाहिए तथा तेल-गैस की जरूरतों के लिए आत्मनिर्भर बनने की दिशा में सरकार को एक स्वदेशी ऊर्जा मॉडल विकसित करना होगा। उम्मीद है कि पिछले कार्यकाल में अधूरे काम इस बार पूरे होंगे।

विपिन दूबे
(स्वतंत्र लेखाकार)

सम्पादकीय

एक बार फिर भाजपा सरकार

2019 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एक बार फिर ऐतिहासिक जीत हासिल की है। भाजपा अध्यक्ष अमित शाह का हमेशा दावा रहा कि वे 3 सौ से अधिक सीटें लाएंगे और यह दावा सच साबित हुआ। 2014 के चुनाव में भी भाजपा मोदीजी को चेहरा बनाकर मैदान में उतरी थी और उसने तब भी जीत का परचम लहराया था। लेकिन तब मोदीजी कांग्रेस विरोधी लहर पर सवार थे। 2011 से अन्ना हजारे और उनके अनुयायियों ने भ्रष्टाचार के विरोध और लोकपाल लाने को लेकर यूपीए सरकार के विरूद्ध जो माहौल बनाया था, 2014 में उसका लाभ भाजपा को मिला था। तब मोदीजी देशवासियों से 60 साल के मुकाबले 60 महीने मांगते थे। जनता ने उन्हें 60 महीने दिए, तो उन्होंने फिर ऐसा माहौल बनाया कि केवल 5 साल में सब कुछ ठीक नहीं होगा, कम से कम 5 साल और चाहिए। और जनता ने एक बार फिर उन्हें 5 सालों के लिए देश सौंप दिया है। बीते 5 सालों में मोदी

सरकार ने क्या-क्या वादे पूरे किए, इस पर पूरे चुनाव के दौरान चर्चा होती रही।

विपक्षी हिसाब और जवाब दोनों मांगते रहे, जबकि भाजपा राष्ट्रवाद, पाकिस्तान, गाय, गोडसे की बात करती रही। एक सहज अनुमान था कि लोगों को रोजगार, बेहतर अर्थव्यवस्था, सामाजिक सुरक्षा, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य इन सबकी बेहतरी चाहिए। लेकिन नतीजे बताते हैं कि इन सबसे पहले भारत की जनता को राष्ट्रवाद की खुराक चाहिए। चाहे पुलवामा हमला हो, बालाकोट की एयर स्ट्राइक हो, प्रज्ञा ठाकुर की उम्मीदवारी हो या गोडसे का महिमामंडन हो, भाजपा का हर दांव सटीक लगा। भाजपा लोगों को यह समझाने में कामयाब रही कि पाकिस्तान से भारत की सुरक्षा मोदीजी ही कर सकते हैं।

भाजपा की जीत से यह बात समझ आती है कि बहुसंख्यक भारतीय धर्मभीरू हैं, वे 15-20 करोड़ अल्पसंख्यकों को लेकर सशंकित रहते हैं, और वे अपने एक छोटे से पड़ोसी देश से भी भयभीत हैं। भय की इन भावनाओं का दोहन भाजपा ने बखूबी किया। इसके अलावा भाजपा का चुनाव प्रबंधन भी प्रतिद्वंद्वियों से बेहतर रहा। इसलिए वह अपने असंतुष्ट सहयोगी दलों को भी साथ ले आई और जिन राज्यों में उसने विधानसभा में हार का सामना किया था, वहां भी जीत हासिल की। ईवीएम जैसे मुद्दे पर भी उसने आखिरकार विपक्ष को हरा दिया। यह चुनाव जितना जमीन पर लड़ा गया था, उतना ही सोशल मीडिया पर भी लड़ा गया था, जहां भाजपा की बड़ी फौज पहले से मौजूद है।

लेकिन इस बार मोदी विरोधी भी काफी मुखर रहे। इससे ऐसा लगने लगा था कि देश में भाजपा के खिलाफ माहौल बन रहा है, साइलेंट वोटर, अंडर करेंट जैसे शब्दों के जरिए यह समझने और समझाने की कोशिशें हो रही थीं कि मतदाता चुप है, तो इसका मतलब है कि वह सत्तारूढ़ दल के खिलाफ है। लेकिन नतीजों ने ऐसे सारे अनुमानों को ध्वस्त कर दिया। एक्जिट पोल और बहुत से न्यूज चैनल भी देश में मोदी सरकार बनवा रहे थे, इसलिए भाजपा की जीत के साथ उन्हें भी जीत हासिल हुई है। लेकिन इस जीत के साथ अब कई सवाल भी खड़े हुए हैं।

नरेन्द्र मोदी ने अपने और अपनी पार्टी के लिए प्रचंड बहुमत हासिल किया है, लेकिन उनकी असली परीक्षा अब शुरु हुई है।